9 भारत में विविधता (Diversity in India)

भारतीय समाज में विविधता (Diversity in Indian Society)

भारत विविधताओं का देश है। भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पक्षों में सर्वत्र अनेकता के दर्शन होते हैं। क्षेत्रगत, भाषागत, जातिगत, प्रजातिगत तथा धार्मिक विभिन्नता सम्पूर्ण समाज में व्याप्त है। इसी कारण भारतीय समाज एंव संस्कृति को एक रंगीन साड़ी नहीं वरन् बहु-रंगी चुनरी की संज्ञा दी जाती है। इस कथन का तात्पर्य है कि भारतीय संस्कृति में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक तत्वों का एक अनुपम समन्वय देखने को मिलता है। भारतीय समाज में सैकड़ों जातियाँ और उपजातियाँ (Caste and Sub-castes) पायी जाती हैं। विभिन्न भाषा-भाषी लोग भी यहाँ मौजूद हैं।

- साथ ही यह अनेक धर्मों का जन्म-स्थल भी है। यहाँ कोई हिन्दू है, तो कोई मुसलमान, कोई ईसाई है तो कोई बौद्ध, सिख आदि। यह देश भौगोलिक दृष्टि से भी अनेक क्षेत्रों में बंटा हुआ है। यहाँ जलवायु संबंधी भिन्नताएँ भी कम नहीं हैं। साथ ही यहाँ लोगों के रहन-सहन, खान-पान और वेशभूषा में भी कई प्रकार की भिन्नताएं दिखाई पड़ती हैं। भारतीय समाज में पायी जाने वाली विविधता का हम निम्न रूप में विवेचन कर सकते हैं:-

धार्मिक विविधता (Religious Diversity)

- भारत विभिन्न धर्मों की भूमि है। कालान्तर में विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के आगमन के फलस्वरूप यहाँ अन्य धर्मों का भी प्रसार हुआ जिससे धार्मिक विविधता और बढ़ती गयी।
- यहाँ विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों की संख्या का प्रतिशत इस प्रकार है- हिन्दू 79.8 प्रतिशत, मुसलमान 15.2 प्रतिशत, ईसाई 2.3 प्रतिशत, सिख 1.7 प्रतिशत, बौद्ध 0.7 प्रतिशत, जैन 0.4 प्रतिशत तथा अन्य 0.9 प्रतिशत। हिन्दू धर्म में अनेक देवी देवताओं की पूजा आराधना की जाती है। धार्मिक उत्सव, दान, व्रत, हवन, यज्ञ, तीर्थ-यात्रा आदि का विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म में सुदृष्टि, सद्भाव, सद्भाषण, सद्कर्म, सद्निर्वाह, सद्प्रयत्न, सद्विचार और सद्ध्यान इन आठ संयमों पर बल दिया जाता है। जैन धर्म ने त्याग और अहिंसा पर बल दिया है। इस्लाम धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है। सिख धर्म एकेश्वरवादी व मूर्तिपूजा विरोधी है, धर्मों की विविधता भारत की अपनी रोचक विशेषता है। भारत में विभिन्न धर्मों में पायी जाने वाली विविधता की चर्चा हम निम्न रूपों में कर सकते हैं:-

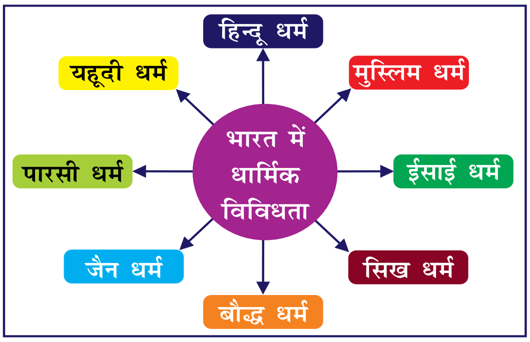

1. हिन्दू धर्म

- मूल रूप से 'हिन्दू' शब्द न तो धर्म का प्रतीक था और न ही किसी विचारधारा का, इसके पीछे भौगोलिक परिस्थितियाँ (Geographical Conditions) थीं। प्राचीन ईरानियों ने सिंधु नदी के पूर्वी क्षेत्र को 'हिन्द' कहा और इस क्षेत्र में रहने वाले 'हिन्दू' कहलाए। कालांतर में हिन्दू शब्द धर्म और संस्कृति से जुड़कर रूढ़ हो गया और उस समय प्रचलित धर्म को 'हिन्दू धर्म' की संज्ञा दी गयी।
- हिन्दू धर्म को समस्त ऊर्जा वेदों से मिलती है। वेदों की संख्या चार मानी गयी है-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। सबसे प्राचीन ऋग्वेद है, जिसके कुछ भागों की रचना 1000 ई.पू. से पहले हुई थी। शेष वैदिक साहित्य की रचना बाद में हुई। आर्यों के जीवन और संस्थाओं के ऐतिहासिक पुनर्निर्माण का आधार यही साहित्य हैं।
- हिन्दू धर्म में सबसे अधिक सम्प्रदाय और उप-सम्प्रदाय (Sects and Sub-sects) हैं। हिन्दुओं में शिव, विष्णु और मातृदेवी जिसकी पूजा दुर्गा, काली और अन्य रूपों में की जाती है, महत्वपूर्ण देवी देवता हैं। अधिकतर पंथों संप्रदायों, उपसम्पद्रायों का उद्‌गम इन्हीं तीनों से हुआ है। इन पंथों में शिव और पार्वती के सम्प्रदाय सबसे प्राचीन हैं जबकि कृष्ण पंथ अपेक्षाकृत नया है।

हिन्दू धर्म के सम्प्रदाय एवं उप सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं:-

- ***वैष्णव सम्प्रदाय:-*** इस सम्प्रदाय के लोग विष्णु को कृष्ण या राम के रूप में पूजते हैं। इसके प्रमुख सम्प्रदाय और उपसम्प्रदाय इस प्रकार हैं:-

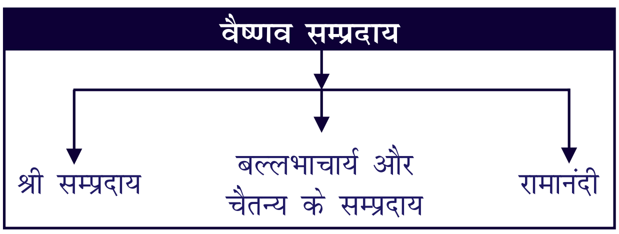

- ***शैव सम्प्रदायः–*** इस सम्प्रदाय में भगवान शिव के विभिन्न रूपों की पूजा अर्चना की जाती है। इस सम्प्रदाय के उपसम्प्रदाय निम्नलिखित हैंः-

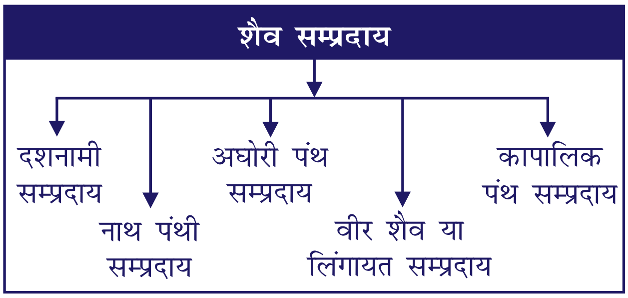

- ***शाक्त सम्प्रदायः–*** शाक्त योग दर्शन में शक्ति (नारी शक्ति) को सर्वोच्च सत्ता माना गया है। इस सम्प्रदाय में दुर्गा, काली, भगवती, चामुण्डा, त्रिपुरा सुन्दरी, राजराजेश्वरी, पार्वती, सीता, राधा आदि देवियों की आराधना की जाती है। इस सम्प्रदाय के उपसम्प्रदाय निम्नलिखित हैंः–

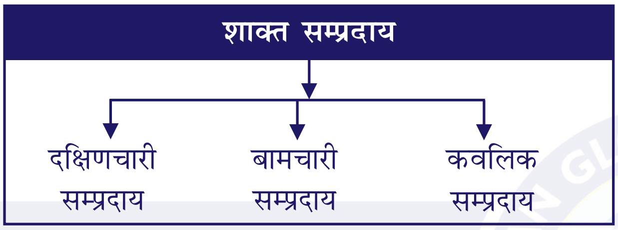

- हिन्दू धर्म विश्व के पुराने धर्मों में से एक है। यह एक बहुदेववादी (अनेक देवी-देवताओं) धर्म है। हिन्दुओं का सबसे अधिक प्रतिशत (95.17%) हिमाचल प्रदेश में है तथा सबसे कम प्रतिशत (2.75%) मिजोरम में है। हिन्दू धर्मावलम्बियों का अनुपात आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, ओड़िसा, राजस्थान, तमिलनाडु एंव त्रिपुरा में राष्ट्रीय औसत से अधिक है तथा जम्मू एंव कश्मीर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड तथा पंजाब में राष्ट्रीय औसत से कम है।
- जनगणना 2011 के अनुसार देश की लगभग 79.8 प्रतिशत आबादी हिन्दू है। देश के ज्यादातर भाग में यह मुख्य धर्म है लेकिन कुछ क्षेत्रों में, जैसे- कश्मीर घाटी, पंजाब, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड तथा केरल के कुछ भागों में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं।

2. *मुस्लिम धर्म*

- अरबी मूल के शब्द 'इस्लाम' का अर्थ है, 'आत्म-समर्पण' (Surrender) इस धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद थे। इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। इस्लाम में दो मत हैं-शिया और सुन्नी। भारत में मुसलमानों की अधिकतम संख्या सुन्नियों की है। अपने आगमन के समय से लेकर वर्तमान काल तक इस्लाम लगभग हर क्षेत्र में भारतीय संस्कृति (Indian Culture) को प्रभावित करता रहा है। कला, संगीत, साहित्य, स्थापत्य कला के क्षेत्र में इस्लामी संस्कृति का व्यापक प्रभाव पड़ा। सूफी आंदोलन मध्य भारत के भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement) और इस्लामी विचारों के संसर्ग का ही प्रभाव था।
- मुस्लिम धर्मावलम्बियों की जनसंख्या के लिहाज से भारत का स्थान पाकिस्तान और इण्डोनेशिया के बाद विश्व में तीसरा है। मुस्लिम देश के सभी भागों में मौजूद हैं लेकिन इनका सबसे अधिक संकेन्द्रण उत्तर-प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल, जम्मू एंव कश्मीर तथा उत्तराखण्ड के दक्षिणी-जिलों में हैं। जम्मू एंव कश्मीर में मुस्लिमों का सबसे अधिक प्रतिशत (68%) है तथा यह मिजोरम में नगण्य (1.35%) है। असम, बिहार, झारखण्ड, जम्मू एंव कश्मीर, केरल, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल में इनका अनुपात राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

3. *ईसाई धर्म*

- ईसा मसीह ने ईसाई धर्म की नींव डाली थी। यह धर्म चौथी शताब्दी में रोम साम्राज्य का राज्य धर्म बना गया था। बाद में रोमन चर्च दो समूहों में बंट गया था-रोम में पोप के अधीन पश्चिमी तथा एंटीओक, अलेक्जेन्ड्रिया और कुस्तुतुनिया के प्राधिधर्माध्यक्ष के अधीन पूर्वी चर्च, बाद में रोमन चर्च भी प्रोटेस्टेंट के रूप में टूटा और पूर्वी चर्चों के कई समुदायों ने अपने प्राधिधर्माध्यक्ष बनाए। ईसाई धर्म एक सर्वव्यापक (Omnipresent) धर्म है, जिसके अनुयायी विश्व में सबसे अधिक हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि यह धर्म भारत में पहली सदी ई॰ में आया जब सीरियाई गिरिजाघर की स्थापना केरल में की गई।
- केरल में ईसाईयों की सबसे अधिक जनसंख्या है- कुल जनसंख्या का 18.4%। आंध्र प्रदेश, मेघालय, नागालैंड तथा तमिलनाडु में ईसाई 1 मिलियन से अधिक हैं। मिजोरम तथा गोवा में भी वे अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। नागालैंड (88.1%) तथा मिजोरम (87.16%) की जनसंख्या में इनकी उच्चतम प्रतिशतता है।

4. *सिख धर्म*

- सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक साहेब द्वारा पंद्रहवीं सदी में की गई। इनका समय 1469-1538 ईसवी माना गया है। 'सिख' शब्द संस्कृत के 'शिष्य' से लिया गया है। गुरु नानक ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल देते हुए ऐसे मत का प्रवर्तन किया, जिसमें दोनों धर्मों की समर्पण भावना झलकती है। सिख धर्म में सम्प्रदायों का उदय ज्यादातर धार्मिक सुधारों और आंदोलनों के रूप में हुआ है। इनमें से कई सम्प्रदायों में हिन्दू और सिख दोनों इसके अनुयायी हैं। निरंकारी व्यास के राधास्वामी और नामधारी कुछ प्रमुख सम्प्रदाय हैं।

- सिख देश की कुल आबादी का 2 प्रतिशत हिस्सा हैं (जनगणना, 2011)। सिख धर्म ने सामाजिक सौहार्द (Social Harmony) बनाने का प्रयास किया, यह धर्म हिन्दू जाति व्यवस्था को हटाना चाहता था एंव विधवा विवाह के पक्ष में था। लेकिन लम्बे समय तक यह पंजाब तक सीमित रहा तथा गुरुमुखी को अपनी भाषा माना। देश के सिखों की कुल जनसंख्या का 79% पंजाब में है। पंजाब के अलावा सिख धर्मानुयायी हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, राजस्थान एंव उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड (ऊधमसिंह नगर) के तराई क्षेत्रों में भी निवास करते हैं। वर्तमान में सिख देश के सभी भागों में देखे जा सकते हैं तथा ये विश्व के कई देशों ब्रिटेन, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, केन्या, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सिंगापुर तथा हांगकांग में भी मौजूद हैं।

5. बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म की स्थापना उत्तर भारत में गौतम बुद्ध (563-483 ई॰ पू॰) द्वारा की गई। बुद्ध का ज्ञान दर्शन इस प्रकार है-दुख है, दु:ख का हेतु और दु:ख का निरोध है तथा दु:ख निरोध का मार्ग है। इन्हें 'चत्वारि आर्य सत्यानि' कहा जाता है। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' ही उनके उपदेश का सार है और आत्मसंयम उसका आधार है। वैशाली में 383 ई. पू. में द्वितीय बौद्ध सभा आयोजित हुई। इसमें नियमों में कुछ शिथिलता लायी गयी परिणामस्वरूप, बौद्धमत का दो सम्प्रदायों में विभाजन हो गया-स्थविर और महासंघिक।
- बौद्ध मतावलम्बी देश के कुल जनसंख्या में एक प्रतिशत से भी कम हैं। 80% बौद्ध मतावलम्बी महाराष्ट्र में रहते हैं। बौद्ध धर्म का परम्परागत गढ़ लद्दाख, जम्मू एंव कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा त्रिपुरा है।

6. जैन धर्म

- भारत जैन धर्म का जन्म स्थान है। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म वैशाली के पास कुंडलग्राम में वज्जि गण के जातृक कुल के राजा सिद्धार्थ के यहाँ ई.पू. 540 में हुआ था। महावीर स्वामी को ही जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। महावीर के दो वर्ष बाद जब मगध में भीषण अकाल पड़ा, तब भद्रबाहु के नेतृत्व में कुछ जैन धर्मावलम्बी दक्षिण दिशा की ओर चले गये और बाकी स्थल-बाहु के नेतृत्व में मगध में रहे। पाटलिपुत्र में मगध के जैनों ने एक संगति (Fallowship) बुलाई जिसमें दक्षिण वाले शामिल नहीं हुए। तब से दक्षिण वाले दिगंबर और मगध वाले श्वेताम्बर कहलाए।
- भारत में यह एक अल्पसंख्यक धर्म है (0.1%)। अन्य देशों में इस धर्म के अनुयायियों की संख्या नगण्य है। इस धर्म के अनुयायी महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात , मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा कर्नाटक में देखे जा सकते हैं, खासकर शहरी क्षेत्रों में जैनियों का व्यवसाय तथा राजनीति पर अच्छा खासा प्रभाव है।

7. पारसी धर्म

- पारसी संत जरथुस्त्र इस धर्म के संस्थापक माने जाते हैं। इनका समय ई.पू. 6ठीं सदी या 7वीं सदी माना जाता है। इस धर्म का केन्द्र बिन्दु यह है कि अच्छे और बुरे के बीच संघर्ष होता है। देश में पारसियों की संख्या लगभग 1.67 लाख है। पारसी साम्राज्य के दिनों में यह एक प्रमुख धर्म था। इस धर्म के नीतिशास्त्र (Ethics of Religion) का सार तीन शब्दों से समझा जा सकता है: हुमाता (अच्छे विचार), हुकता (अच्छी बोली) तथा हुवर्सता। पारसियों का धार्मिक ग्रंथ किनकरी है।
- पारसी सबसे पहले भारत में 766 ई॰ में आए (दीव)। उन्होंने अपनी 'कॉलोनी' (उपनिवेश) को भारत स्थानान्तरित किया (1490)। वहाँ से उनका विस्तार नवसारी तथा उदवाड़ा तक हुआ। उन पर हिन्दू रीति-रिवाजों (Custom and Tradition) का प्रभाव पड़ा है लेकिन वे ब्रह्मचर्य की वकालत नहीं करते हैं। पारसी धर्म पुनर्विवाह की इजाजत देता है। लगभग 80% पारसियों की आबादी वृहत् मुंबई में केन्द्रित है तथा अन्य नवसारी, उदवाड़ा, सूरत तथा अहमदाबाद में हैं।

8. यहूदी धर्म

- विश्व के प्रमुख प्राचीनतम धर्मों में से एक यहूदी धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास रखता है। यहूदियों के इस धर्म से ही ईसाइयत और इस्लाम विकसित हुए। इस धर्म के आधारभूत नियम व शिक्षा 'तोराह-मूल' हिब्रू बाइबिल की प्रथम पांच पुस्तकों-पर आधारित हैं। भारत में यहूदियों के दो समुदाय हैं-मलयालम भाषी 'कोचीनी' और मराठी भाषी 'बेने इजराइल'। लगभग 2000 वर्ष पहले यहूदी शरणार्थी भारत के पश्चिमी तट पर आकर बसे थे। यद्यपि उनकी संख्या कम है, किन्तु प्रारम्भ से ही उन्हें अपने अंदाज में जीने, अपने सिनागॉग (यहूदी प्रार्थना भवन) बनवाने की अनुमति प्रदान की गयी है।
- भारत के अधिकांश भाग में हिन्दू धर्म एंव संस्कृति का प्रभुत्व है तथा कहीं-कहीं मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध मतावलम्बी एंव जनजातियों की भी आबादी देखी जा सकती है। उत्तर पूर्वी पहाड़ी राज्यों में ईसाइयों, जनजातियों, हिन्दुओं तथा मुस्लमानों की मिश्रित जनसंख्या है। इस्लाम धर्म के अनुयायियों की बहुसंख्या वाला क्षेत्र जम्मू एंव कश्मीर राज्य का कश्मीर प्रखण्ड तथा कारगिल क्षेत्र है। मुस्लिम उत्तरी केरल, आगरा, मेरठ, लखनऊ, रोहेलखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर प्रखण्ड में भी अच्छी खासी संख्या में

हैं। पंजाब तथा केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ देश का सिख बहुल क्षेत्र है।

भाषायी विविधता (Linguistic Diversity)

- मानवीय अभिव्यक्ति (Expression) का सर्वोत्तम साधन मानव की भाषा होती है। भाषा के माध्यम से ही विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। भारत विभिन्न भाषा-भाषी लोगों का देश है। हमारे देश में 189 भाषाएँ तथा 544 बोलियाँ प्रचलित हैं। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गयी है। इन 22 भाषाओं के अतिरिक्त मालवी, मारवाड़ी, भोजपुरी, पहाड़ी, राजस्थानी आदि भाषाएँ भी यहाँ महत्वपूर्ण हैं जिनका प्रयोग लोग बोलचाल में करते हैं।
- भारत में बोली जाने वाली भाषाओं का संबंध निम्नलिखित भाषायी समूहों (Linguistic groups) से हैं:-

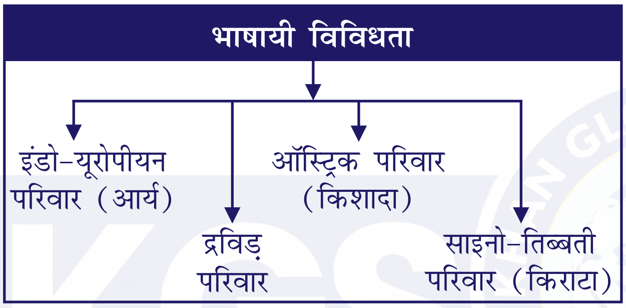

इंडो यूरोपीयन परिवार (आर्य)

- यह भारतीय भाषाओं का सबसे प्रमुख भाषाई समूह है, जो उत्तरी भारत के ज्यादातर लोगों द्वारा बोली जाती है। इस भाषा का प्रमुख क्षेत्र खड़ी बोली का प्रदेश कहलाता है, जिसमें हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश शामिल हैं। इस क्षेत्र से दूर जाने पर इस भाषा से विभिन्न रूप तथा इससे बनी उप-भाषाएँ (Sub-languages) देखी जा सकती हैं। प्रो॰ ए॰ अहमद ने प्रमुख केन्द्र (Core Area) से दूर विभिन्न दिशाओं में खड़ी बोली के विसरण (Diffusion) का एक आरेख निरूपण (Formulation) किया है।
- दार्दी, कोहिस्तानी, कश्मीरी, लहनदा, सिन्धी, गुजराती, मराठी, बंगाली, असमिया, बिहारी, अवधी, बाघेली, कच्छी, उड़िया, छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, नेपाली तथा पहाड़ी इस भाषा की शाखाएँ हैं।
- हिन्दी (राष्ट्रीय भाषा) इंडो-यूरोपीयन परिवार की मुख्य भाषा है, जो देश की 40% आबादी द्वारा बोली जाती है। यह मुख्य रूप से बिहार, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड में बोली जाती है।
- उर्दू का नजदीकी संबंध हिन्दी भाषा से है। उर्दू बिहार, दिल्ली, हैदराबाद, जम्मू एंव कश्मीर, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा नगरीय भारत के ज्यादातर स्थानों में लोकप्रिय है।

द्रविड़ परिवार

- भारतीय भाषाओं के द्रविड़ परिवार में तेलुगू (आंध्र प्रदेश), कन्नड़ (कर्नाटक), तमिल (तमिलनाडु) तथा मलयालम (केरल) शामिल हैं, जो देश में 22% लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

ऑस्ट्रिक परिवार

- ऑस्ट्रिक भाषा छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, मेघालय, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के जनजातीय समूहों द्वारा बोली जाती है। यह भाषा दो मुख्य शाखाओं से संबंध रखती है- (1) मुंडा (संथाली), तथा (2) मोन-खमेर (खासी तथा निकोबारी)। मोन खमेर (खासी) खासी तथा जयंतिया पहाड़ों (मेघालय) तक ही सीमित है तथा निकोबारी निकोबार द्वीप तक ही सीमित है। मुंडा भाषा छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के जनजातियों द्वारा बोली जाती है।

चीनी-तिब्बती परिवार

- चीनी-तिब्बती भाषा मुख्यतः हिमालय क्षेत्र में बोली जाती है। इसके तीन प्रमुख उप-विभाजन (Sub-division) हैं:-

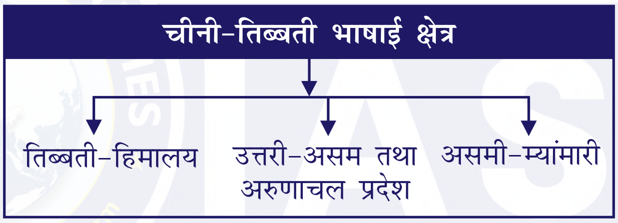

1. ***तिब्बती-हिमालय-*** इसमें हिमाचल प्रदेश की चम्बा, लाहौली, किन्नौरी तथा लेपचा भाषाएँ शामिल हैं। बालटी, भूटिया, लद्दाखी तथा तिब्बती -भाषा जम्मू एंव कश्मीर राज्य के उत्तरी भाग में बोली जाती हैं।
2. ***उत्तरी-असम तथा अरुणाचल प्रदेश-*** उत्तरी असम तथा अरुणाचल प्रदेश की मुख्य भाषाएँ हैं- अबोर, अका, असमियाँ, डाफला, मिरि तथा मिशिंग।
3. ***असमी-म्यांमारी-*** ये भाषा असम के लोगों, बोडो, कोच्चि, कुकीचीन, मिरी, नागा तथा जाकसा जनजातियों द्वारा बोली जाती है।

- भारतीय राज्यों की रूपरेखा (Framework) 1956 में भाषा के आधार पर तय की गई। प्रत्येक अनुसूचित भाषा का एक विशेष प्रदेश होता है, जहाँ अधिकांश आबादी द्वारा इस भाषा को बोला जाता है। इस प्रदेश (राज्य) में ही उस भाषा का केन्द्र (Core) भी होता है। भाषाई प्रदेश की सीमा एक निर्धारित रेखा नहीं होती, बल्कि एक परिवर्ती (Variable) क्षेत्र होता है, जहाँ धीरे-धीरे एक भाषा अपना प्रभाव खो देती है तथा दूसरी भाषा का प्रभाव क्षेत्र शुरू हो जाता है। अनेक क्षेत्रों में भाषाओं का मिश्रण भी देखने

को मिलता है। इसके अलावा कई राज्यों में निकटवर्ती राज्य की मुख्य भाषा उस राज्य की दूसरी प्रमुख भाषा होती है, जिसे उस राज्य के दूसरे सबसे बड़े समूह द्वारा बोला जाता है, उदाहरण के लिये केरल में तमिल दूसरी प्रमुख भाषा है तथा तमिलनाडु में तेलगु दूसरी प्रमुख भाषा है। उर्दू कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश में दूसरी प्रमुख भाषा है।

- हिन्दी भाषा देश की अधिकारिक भाषा है, जिसे देश के लगभग 40% लोगों द्वारा बोला जाता है। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा दिल्ली शामिल हैं, जहाँ 90% आबादी हिन्दी बोलती है।
- उर्दू मूलत: हिन्दी का एक रूपभेद (Formdifference) है, जिसे देवनागरी-लिपि की बजाय अरबी/ फारसी लिपि में लिखा जाता है। इसका जन्म भारत में हुआ, लेकिन एक ठोस प्रादेशिक आधार के अभाव में यह भाषा वास्तव में 'बेघर' है। जम्मू एंव कश्मीर ने इस भाषा को राज्य की आधिकारिक भाषा माना है। यह देश के लगभग 8% आबादी की मातृ-भाषा है। यह मुख्यत: उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, दिल्ली तथा उत्तराखण्ड में बोली जाती है। गुजराती तथा कन्नड़ का इस क्रम में अगला स्थान है। द्रविड़ भाषाओं में मलयालम को बोलने वाले सबसे कम लोग हैं। इस भाषा का केन्द्र केरल (92%) है तथा विस्तार तमिलनाडु, महाराष्ट्र व आंध्र प्रदेश तक है।
- बंगाली भाषा भारत के पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश की आधिकारिक भाषा है, लेकिन यह इसके आस-पास असम, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा त्रिपुरा राज्य में भी बोली जाती है। उड़िया की एक विशेषता यह है कि यह पुरानी अपभ्रंश है तथा इसे संस्कृत द्वारा समृद्ध किया गया है। असमिया भाषा का एक भिन्न उच्चारण तथा व्याकरण है लेकिन इसे अक्सर बंगाल-असम समूह में शामिल किया जाता है।

सांस्कृतिक विविधता (Cultural Diversity)

- भारत के विभिन्न प्रदेशों में भाषा, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, कला, संगीत, तथा नृत्य, लोकगीत, लोकगाथा, विवाह-प्रणाली तथा जीवन संस्कारों में हमें अनेक रोचक व आकर्षक भेद देखने को मिलते हैं। ग्रामीण और नगरीय लोगों की, हिन्दू और मुसलमानों की, परम्परावादी और आधुनिक कहे जाने वाले लोगों की वेश-भूषा और खान-पान में रात दिन का अंतर है। यहाँ विभिन्न नृत्य शैलियों के अतिरिक्त तुर्की, ईरानी, भारतीय व पाश्चात्य चित्रकला मूर्तिकला तथा वास्तुकला के विविध रूप देखने को मिलते हैं। यहाँ मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, स्तूपों आदि में कला की भिन्नताओं का सरलता से पता लगाया जा सकता है।

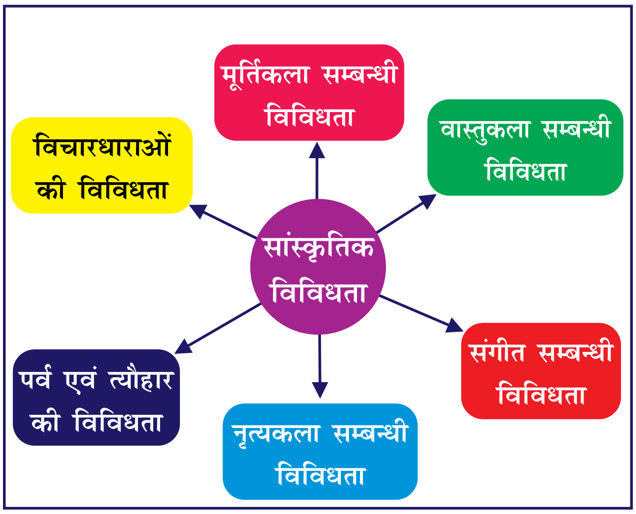

मूर्तिकला सम्बन्धी विविधता (Sculptural Variety)

- भारत में मूर्तिकला की दो परम्परागत शैली प्रचलित रही है। पहली गंधार शैली है, यह शैली रोमन प्रभाव से मुक्त है इसमें मुख्यत: काले पत्थरों का प्रयोग किया जाता है। इसमें बुद्ध को घुंघराले बालों में चित्रित किया गया है। मूर्तिकला की दूसरी शैली मथुरा शैली है, यह देशी शैली है इसमें लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

वास्तुकला सम्बन्धी विविधता (Architectural Diversity)

- भारत में वास्तुकला की तीन शैलियाँ प्रचलित रही हैं। प्रथम नागर शैली है, जिसका विस्तार उत्तर भारत में रहा है, द्वितीय द्रविड़ शैली है, जिसका विस्तार दक्षिण भारत में रहा है एवं तीसरी बेसर शैली है जो उपरोक्त दोनों शैलियों का मिश्रित रूप है, इसका विस्तार मध्य भारत में देखा जा सकता है।

संगीत सम्बन्धी विविधता (Musical Diversity)

- भारत में शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलियाँ प्रचलित रही हैं। पहली हिन्दुस्तानी शैली है, जिसका प्रसार मुख्यत: उत्तर भारत में देखा जाता है। द्वितीय कर्नाटक शैली रही है, जिसका प्रसार मुख्यत: दक्षिण भारत में रहा है।
- शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में लोक संगीत की भी अपनी परम्परा रही है।

नृत्यकला सम्बन्धी विविधता (Choreographic Diversity)

- आधुनिक विश्व में नृत्य को सर्वाधिक चित्ताकर्षक (Captivating) व माधुर्यपूर्ण (Melodious) कला माना जाता है। प्राचीनतम कला के रूप में भी नृत्य कला स्वीकृत है। आदिम युग में मानव अपने हृदयावेग को सर्वदा अंग-प्रत्यंग की गति की सहायता से प्रकट करते थे। वही क्रमश: नृत्यकला के रूप में विकसित हुआ।
- भारत में नृत्य परंपरा 2000 वर्षों से भी ज्यादा वर्षों से निरन्तर चली आ रही है। नृत्य की विषयवस्तु धर्मग्रंथों, लोककथाओं और प्राचीन साहित्य पर आधारित रहती है।

इसकी दो प्रमुख शैलियाँ– शास्त्रीय नृत्य और लोकनृत्य। शास्त्रीय नृत्य वास्तव में प्राचीन नृत्य परंपराओं पर आधारित होते हैं और इसकी प्रस्तुति के नियम कठोर हैं। इसमें प्रमुख हैं–'भरतनाट्यम', 'कथककली', 'कत्थक', 'मणिपुरी', 'कुचिपुड़ी', और 'ओडिसी'। 'भरतनाट्य' मुख्यत: तमिलनाडु का नृत्य है। 'कथकली' केरल की नृत्यशैली है। 'कत्थक' भारतीय संस्कृति पर मुगल प्रभाव से विकसित नृत्य का एक अहम शास्त्रीय रूप है। मणिपुर की नृत्य शैली 'मणिपुरी' में कोमलता और गीतात्मकता है जबकि 'कुचिपुड़ी' की जड़ें आंध्र प्रदेश में हैं। उड़ीसा का 'ओडिसी' प्राचीनकाल में मंदिरों में नृत्य रूप में प्रचलित था जो अब समूचे भारत में प्रचलित है। लोकनृत्य और आदिवासी नृत्य की भी विभिन्न शैलियाँ प्रचलित हैं।

पर्व एवं त्यौहारों की विविधता (Diversity of Religion and Festivals)

- नानाविध धर्मों एवं भाषाओं की इंद्रधनुषी आभा से दीप्तिमान भारत देश के रंग-बिरंगे पर्व त्यौहार और मेले इसके सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग हैं, जिनके बिना इस देश की संस्कृति अधूरी है। भारत के विभिन्न धर्मों एवं क्षेत्रों में मनाए जाने वाले पर्व एवं त्यौहारों के भी विविध रूप रहे हैं, जिसकी चर्चा हम निम्न रूपों में कर सकते हैं–
- हिन्दुओं के पर्व त्यौहार पूरे वर्ष बनाए जाते हैं। इनमें से कुछ तो हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायों व वर्गों (Sects and Class) द्वारा मनाए जाते हैं और कुछ क्षेत्रीय स्तर पर मनाए जाते हैं। कुछ प्रमुख हिन्दू पर्व एवं त्यौहार निम्नलिखित हैं:– मकर सक्रांति, लोहड़ी, पोंगल, बिहू, होली, दशहरा, दीपावली, रक्षाबंधन, गुरुपूर्णिमा इत्यादि।
- मुसलमानों के त्यौहार एवं धार्मिक दिन निश्चित तिथि को नहीं पड़ते, किन्तु प्रत्येक वर्ष लगभग 11 दिन पहले आते हैं। मुस्लिम त्यौहारों में ईद-उल-फितर, रमजान, ईद-उल-जुहा (बकरीद), मोहर्रम प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त सूफी संतों की कब्र पर उर्स का मेला लगता है। अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर उर्स का मेला लगता है, जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बड़ी श्रद्धा से भाग लेते हैं।
- ईसाइयों के भी अपने पर्व-त्योहार हैं। इनमें 'ईस्टर', 'क्रिसमस' इत्यादि प्रमुख हैं। ईस्टर एक समारोही उत्सव है। यह ईसा मसीह के क्रूस पर लटकाए जाने के बाद उनके जीवित होने का उत्सव है। ईस्टर में समाप्त होने वाले पवित्र सप्ताह से जुड़े दिन हैं–'पाम संडे', इसे यीशु के जेरूसलम में प्रवेश का दिन मानते हैं, 'मॉन्डी थर्सडे', जो ईसा का आखिरी भोजन का दिन है, इस दिन उन्हें गिरफ्तार कर कैद में रखा गया था, 'गुड फ्राइडे', यह क्रूस पर ईसा के मरने का दिन है-यह शोक का दिन है, 'होली सैटरडे', यह पूरी रात जगने से जुड़ा है और 'ईस्टर संडे' को ईसा के पुनर्जीवन (Resuscitation) का दिन मानते हैं।
- 'क्रिसमस' ईसाइयों के लिए अत्यंत खुशी का दिन है। यह ईसा मसीह का जन्मोत्सव है। 25 दिसम्बर को यह उत्सव मनाया जाता है।
- सिख अपने गुरुओं का जन्मोत्सव 'गुरुपर्व' मनाते हैं। गुरु नानक का गुरुपर्व कार्तिक पूर्णिमा को पड़ता है और इसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। गुरु गोविंद सिंह का गुरुपर्व भी उतनी ही श्रद्धा व धूम-धाम से मनाया जाता है।
- बौद्ध वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध जयंती मनाते हैं। यह बुद्ध के जन्म के साथ-साथ उनके ज्ञान प्राप्त करने का भी परिचायक है। लद्दाख के हेमस बौद्ध विहार में गोम्पा के संरक्षक इष्टदेव गुरु पद्मसम्भव के जन्म का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है।
- जैनियों के 24वें और अंतिम तीर्थंकर महावीर का जन्म दिन महावीर जयंती के रूप में मनाया जाता है।
- पारसियों का सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहार 'नवरोज' है यानि नया दिन। यह वसंत विषुव यानि 20 मार्च को मनाया जाता है। यह शाश्वत नवरोज का उल्लास भरा उत्सव है, जब अहुर मजदा का साम्राज्य पृथ्वी पर आएगा। पारसियों का एक सम्प्रदाय 'फासलिस' नवरोज को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। अगस्त-सितंबर में पारसी, अपना नव वर्ष 'पतेती' मनाते हैं। इसके एक सप्ताह पश्चात् वे जरथुस्त्र का जन्म 'खोरदद साल' मनाते हैं। इन उत्सवों पर दिए जाने वाले प्रीतिभोज 'गहम्बर' कहलाते हैं।

विचारधाराओं की विविधता (Diversity of Ideologies)

- प्राचीन काल से भारत में अनेक दार्शनिक विचारधाराओं का अस्तित्व रहा है। वास्तव में, अनेक विचारधाराओं का सहअस्तित्व (Coexistence) व एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता (Tolerance) का भाव प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की अद्वितीय विशेषता रही है। इन दार्शनिक विचारधाराओं में अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, जैन, बौद्ध, न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, योग, चार्वाक आदि दर्शनों का प्रमुख स्थान है।

भौगोलिक विविधता (Geographical Diversity)

- भारत में यदि एक ओर हिम से ढकी हुई व आकाश को छूती पर्वतों की चोटियाँ और हिमालय की लम्बी व ऊंची पर्वत श्रेणियाँ हैं, तो दूसरी ओर समुद्र की लहरों से खेलते हुए विस्तृत उपजाऊ मैदान है। यदि एक ओर राजस्थान का शुष्क मरुस्थल है जहाँ मीलों मानव का नामोनिशान तक नहीं है, तो दूसरी ओर सिन्धु-गंगा का मैदान भी है, जहाँ कोटि-कोटि मानव-जीवन हिलोरें ले रहे हैं। यहाँ दोमट और

कछारी, काली और लाल विभिन्न प्रकार की मिट्टियां पायी जाती हैं। किसी क्षेत्र की जमीन सोना उगलती है, तो किसी क्षेत्र की जमीन में बबूल भी नहीं उगता। इस भौगोलिक विविधता का प्रभाव यहाँ के निवासियों के रंग-रूप, बनावट, रहन-सहन, वेश- भूषा, साज-सज्जा, भाषा, धर्म और विधि-विधानों पर पड़ता है।

- भारत की जलवायु में भी बड़ी भिन्नता देखने को मिलती है। भारत को भौगोलिक दृष्टि से पांच बड़े प्राकृतिक खण्डों में विभाजित किया गया है-

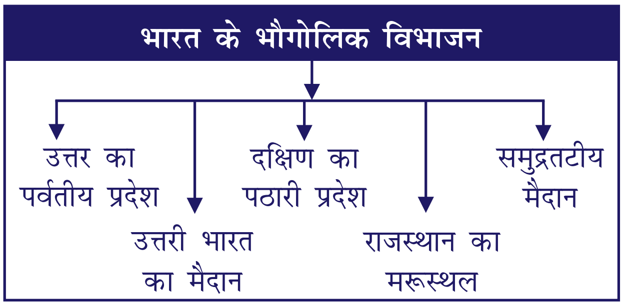

- इन विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु संबंधी काफी भिन्नता देखने को मिलती है। मैदानी क्षेत्रों में ऋतु एवं तापमान में परिवर्तन आता रहता है। पहाड़ी क्षेत्रों में अधिकांशत: सर्दी का मौसम रहता है, तो दूसरी ओर रेगिस्तानी प्रदेशों में गर्मी का। कई प्रदेशों में भारी वर्षा होती है, तो कई क्षेत्रों में साल भर में मुश्किल से दो-चार इंच वर्षा होती है। अतएव विभिन्न स्थानों की सांस्कृतिक भिन्नता (Cultural Differences) का एक कारण जलवायु संबंधी भिन्नता भी है।

प्रजातीय विविधता (Racial Diversity)

- भारत प्रजातियों का एक अजायबघर है। यहाँ प्रमुखत: नीग्रीटो, प्रोटो ऑस्ट्रेलियाड, नार्डिक, भूमध्य सागरीय, मंगोल और आर्य भाषा-भाषी प्रजाति जैसे अल्पाइन, दीनारिक, अर्मीनियाई आदि पायी जाती है। यही कारण है कि भारत की अपनी कोई विशुद्ध प्रजाति नहीं है। यह कहा जाता है कि 'स्मरणातीत युगों से भारत परस्पर विरोधी प्रजातियों और सभ्यताओं का संगम स्थल रहा है और इसमें आत्मसातीकरण (Assimilation) तथा समन्वय की प्रक्रियाएं चलती रही हैं। सभी प्रजातियों में शारीरिक विविधताओं के साथ-साथ रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, रीति-रिवाज एवं प्रथा परंपराओं संबंधी भिन्नताएँ भी पायी जाती हैं।

गुहा का वर्गीकरण (Classification of Guha)

- डॉ. बी॰एस॰ गुहा (भारत के मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक) ने भारत की प्रजातियों का वर्गीकरण 1913 की जनगणना संचालन से प्राप्त भौतिक मापन के आधार पर किया है। गुहा द्वारा दिया गया भारतीय प्रजातियों का वर्गीकरण, सबसे विश्वसनीय माना जाता है। गुहा ने भारत में निम्नलिखित छ: प्रजातीय समूहों (Ethnic Groups) को मान्यता दी है:-

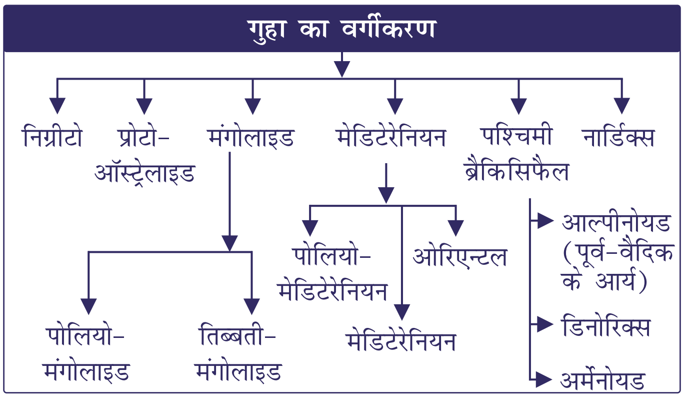

1. ***निग्रीटो-*** संभवत: निग्रीटो भारत में सबसे पहले आने वाली मानव प्रजाति थी। इस प्रजाति की विशेषता इनका छोटा कद (150 से॰मी॰), घुँघराले बाल, गोल ललाट, चपटी नाक, बाहर की ओर निकला हुआ जबड़ा, छोटी ठुड्डी, काला रंग, कमजोर हाथ तथा लम्बी भुजाएं हैं। इस प्रजाति के प्रतिनिधि हैं- अंडमानी तथा निकोबारी (अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह), इरूला, कादार, कनिकार, मुथाईवान, पनियन, पुलियन, तथा उराली जो तमिलनाडु, केरल तथा कर्नाटक के पहाड़ों पर रहते हैं।

   अंगामी-नागा में निग्रीटो की कुछ विशेषता पाई जाती हैं। यह माना जाता है कि निग्रीटो प्रजाति के लोग अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में (जारवा, ओंगे, सेंटिनलीज, शैम्पेन इत्यादि) मलेशिया के प्रायद्वीप से आए थे। रूप रंग, संस्कृति तथा रिवाजों में ये प्रजातियां मलेशियाई प्रायद्वीप की सेमाँग तथा सकाई जनजाति के अत्यंत करीब हैं।

2. ***प्रोटो-ऑस्ट्रेलाइड-*** निग्रीटो के बाद, भारत में प्रोटो ऑस्ट्रेलाइड का प्रवेश संभवत: आस्ट्रेलिया से हुआ। उनके प्रतिनिधि अभी भी भील, चेंचु, होस, कुरूम्बा, मुंडा, संथाल तथा येरूवा जनजातियों में मौजूद हैं। इस प्रजाति के लोग गहरे भूरे या काले-भूरे रंग के होते हैं, उनकी नाक चौड़ी होती है, बाल घुँघराले, कद छोटा तथा होंठ मोटे व बाहर की ओर निकले हुए होते हैं।

3. ***मंगोलाइड-*** मंगोलाइड चीन, मंगोलिया, तिब्बत, मलेशिया, थाइलैंड तथा म्यांमार से भारत आए। इस प्रजाति ने जम्मू एवं कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, हिमालय तथा हिमालय के सीमांत क्षेत्रों (Marginal Areas) एवं भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों को अधिकृत किया।

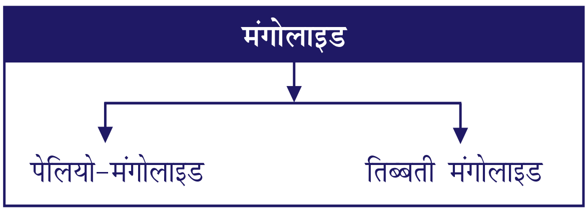

डॉ॰ बी॰एस॰ गुहा ने मंगोलाइड के दो उप-समूहों को मान्यता दी:–

(a) पेलियो-मंगोलाइड– सबसे आदिम मंगोलाइड प्रजाति का प्रकार है। इसके लम्बे बदन पर कम बाल होते हैं। यह प्रजाति हिमालय के सीमांत प्रदेश में पाई जाती हैं, विशेषकर अरुणाचल, असम तथा भारत म्यांमार सीमा से लगे जिलों में। डफला, गारो, कचारी, खासी, कुकी-नागा, लालुंग, माची, मिरी तथा टिप्पेरा इस प्रजाति के प्रतिनिधि हैं।

(b) तिब्बती-मंगोलाइड– भूटान, हिमाचल प्रदेश, नेपाल, सिक्किम तथा उत्तराखण्ड में पाए जाते हैं। इस प्रजाति की विशेषता लम्बा कद, हल्का पीला रंग, बदन पर प्रचुर मात्रा में बाल, तिरछी आँखे, लम्बी नाक तथा चपटा चेहरा है। भूटिया, गोरखा, लद्दाखी, किन्नौरी तथा थारू तिब्बती-मंगोलाइड प्रजाति समूह के प्रतिनिधि हैं।

4. मेडिटेरेनियन– डॉ॰ गुहा के अनुसार यह प्रजाति मेडिटेरेनियन क्षेत्र से भारत आयी। डॉ॰ गुहा ने मेडिटेरेनियन प्रजाति के तीन उप-समूहों की खोज की, ये हैं:–

मेडिटेरेनियन

- पेलियो-मेडिटेरेनियन
- मेडिटेरेनियन
- ओरिएन्टल

(a) पेलियो-मेडिटेरेनियन– पेलियो मेडिटेरेनियन सबसे पुराना समूह है। इनकी विशेषता इनका छोटा कद, लम्बा सिर, छोटी तथा मध्यम नाक एवं भूरा रंग है। इस प्रजाति का भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश संभवत: नवपाषाण काल में हुआ तथा वे विंध्य पर्वत के दक्षिण के एकाकी एवं सापेक्षिक (Isolated and Relative) एकाकी क्षेत्रों में फैल गए।

(b) मेडिटेरेनियन– इस प्रजाति का मध्यम कद, जैतूनी-भूरा रंग, लम्बा सिर तथा बड़ी आँखे होती हैं। यह प्रजाति हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा केरल में पायी जाती है।

(c) ओरिएन्टल मेडिटेरेनियन– यह प्रजाति भारत में प्रवेश करने वाली अंतिम प्रजाति है। यह प्रजाति अपने लम्बे एवं उत्तल नाक तथा गोरे रंग से पहचानी जाती है। यह प्रजाति राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तथा उत्तराखण्ड के दक्षिणी भाग (हरिद्वार तथा ऊधमसिंह नगर) तक सीमित हैं।

5. पश्चिमी ब्रैकिसिफैल- डॉ॰ गुहा ने इस प्रजाति को तीन उप-समूहों (Sub-group) में विभाजित किया–

पश्चिमी ब्रैकिसिफैल

- आल्पीनोयड (पूर्व-वैदिक काल के आर्य)
- डिनेरिक्स
- अर्मेनोयड

(a) आल्पीनोयड (पूर्व-वैदिक काल के आर्य)– इस प्रजाति का प्रवेश सिन्धु घाटी में हुआ तथा वे गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु में फैल गए। बाद में इनका प्रवेश गंगा की घाटी में हुआ तथा वे पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा तक जा पहुंचे। इस प्रजाति की विशेषता मध्यम कद, गोल चेहरा, लम्बे सीधे बाल तथा गोरा रंग होता है।

(b) डिनेरिक्स– डिनेरिक्स ने आल्पीनोयड का अनुसरण (Pursuance) किया तथा गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु तक जा पहुंचे इस प्रजाति की विशेषता इनका लम्बा कद, भूरा रंग, लम्बा चेहरा तथा तीखी नाक है। यह प्रजाति आल्पीनोयड के साथ मिल गई है। इस प्रजाति के मुख्य प्रतिनिधि मुख्यत: काठियावाड़ तथा कुर्ग (कर्नाटक) में पाए जाने वाले लोग हैं।

(c) अर्मेनोयड– अर्मेनोयड अर्मेनिया से भारत आए। इस प्रजाति की विशेषता इनका मध्यम कद, चौड़ा सिर, लम्बी नाक तथा इनके बदन पर बाल है। इस प्रजाति के मुख्य प्रतिनिधि मुख्यत: मुंबई तथा गुजरात के पारसी हैं।

6. नार्डिक्स– नार्डिक्स अथवा वैदिक आर्य लगभग दूसरे मिलेनियम ईसा पूर्व में उत्तर पश्चिम दिशा से भारत पहुंचने वाली अंतिम प्रजाति थी। नार्डिक्स ने द्रविड़ को हराकर उत्तरी भारत के मैदान (आर्यवर्त अथवा मध्य प्रदेश) में अपना गढ़ स्थापित किया। बाद में वे दक्षिण भारत पहुंचे तथा वहां बड़े राज्यों की स्थापना की। इस प्रजाति की मुख्य विशेषता इनका लम्बा कद, लम्बा सिर, लम्बा चेहरा, नीली आँखे तथा सुनहरे बाल हैं। इस प्रजाति के प्रतिनिधि पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा दक्षिणी उत्तराखण्ड में ऊंची जातियों, जैसे-राजपूत अथवा ब्राह्मण के बीच देखे जा सकते हैं। पश्चिम बंगाल तथा महाराष्ट्र में स्थानीय रूप से इस प्रजाति का अन्तर-मिश्रण अन्य प्रजातियों तथा मानवजातीय समूहों (Ethnic Groups) से हुआ।

यद्यपि भारतीय प्रजातियों तथा मानवजातीय समूहों का गुहा द्वारा दिया गया वर्गीकरण सबसे विश्वसनीय माना जाता है लेकिन वर्तमान विश्व में विभिन्न समूहों का अन्तर-मिश्रण अधिक हो रहा है। एकाकी तथा सापेक्षिक एकाकी के क्षेत्रों को सड़कों के द्वारा राष्ट्रीय व राज्य राजमार्ग से जोड़ा गया है, जिसके कारण

विभिन्न प्रजातियों, धर्मों तथा जातियों के बीच परस्पर-क्रिया (Mutual Action) बढ़ गई है। 21वीं सदी के सांस्कृतिक परिदृश्य में कोई एकाकी समूह (Isolated Group) शायद ही ऐसा है, जो अपने प्रजाति तथा मानवजातीय समूह का सही तथा प्रारूपिक प्रतिनिधि है। प्रजातीय, मानवजातीय तथा जाति समूहों में लोगों का विभाजन उप-राष्ट्रवाद को जन्म देता है, जो राष्ट्रीय एकीकरण के प्रक्रिया के विपरीत है।

जनजातीय विविधता (Tribal Diversity)

- कारकों की बहुलता (Multiplicity of Factors) तथा समस्या की जटिलता के कारण भारतीय जनजातियों का विभिन्न समूहों में वर्गीकरण करना बहुत सरल नहीं है। फिर भी भारत की जनजातियों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है:-

जनजातीय विविधता

- भूखण्डीय वितरण
- व्यवसाय अथवा अर्थव्यवस्था
- सांस्कृतिक संपर्क
- धार्मिक विश्वास

जनजातियों का भौगोलिक वितरण (Geographical Distribution of Tribes)

- भारत के भौतिक मानचित्र को देखते हुए तथा जनजातीय जनसंख्या के वितरण के अनुसार हम पाते हैं कि भूगोल तथा जनजातीय जनसांख्यिकी भी क्षेत्रीय समूहीकरण (Grouping) तथा मण्डलीय वर्गीकरण की अनुमति देते हैं। बी.एस. गुहा ने भारतीय जनजातियों को तीन मण्डलों में वर्गीकृत किया है।

जनजातियों का भौगोलिक वितरण

- उत्तर-पूर्वी तथा उत्तरी मंडल
- केन्द्रीय अथवा मध्य मंडल
- दक्षिण मंडल

1. ***उत्तर-पूर्वी तथा उत्तरी मण्डल-*** इसमें हिमालय के नीचे का क्षेत्र तथा भारत की पूर्वी सीमाओं की पहाड़ी घाटियाँ सम्मिलित हैं। असम, मणिपुर तथा त्रिपुरा के जनजातीय लोगों को इस भौगोलिक मण्डल के पूर्वी भाग में सम्मिलित किया जा सकता है, जबकि उत्तरी भारत में पूर्वी कश्मीर, पूर्वी पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की जनजातियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

- असम तथा तिब्बत के मध्य रहने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण जनजातियाँ अका, डफ़ला मिरी, गुरुंग व अपतानी सुबनसिरी नदी के पश्चिम में बसती हैं। 'मिश्मी' जनजाति देवांग तथा लोहित नदियों के बीच उच्च क्षेत्रों में बसती हैं तथा इसके पूर्व में खामती तथा हिंसको जनजाति पायी जाती हैं। नागा पर्वतों के दक्षिण में मणिपुर, त्रिपुरा राज्य के मध्य होकर तथा चिरागम पहाड़ियों की शृंखला में कुकी, लुशाई, खासी तथा गारों (अब नवगठित मेघालय राज्य के निवासी) जनजातियाँ रहती हैं। सिक्किम हिमालय के निचले क्षेत्र में तथा दार्जिलिंग के उत्तरी भाग में अनेक जनजातियाँ रहती हैं, उनमें लेप्चा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश के हिमालयी क्षेत्र में थारू, भोकसा, जौनसारी (खासा), मोठिया, राजी जैसी महत्वपूर्ण जनजातियाँ पायी जाती हैं।

- सम्पूर्ण भौगोलिक मण्डल में विरल जनसंख्या पायी जाती है। (यद्यपि यह क्षेत्र पर्याप्त रूप से विस्तृत है) भौगोलिक समानता के फलस्वरूप इस मण्डल की अधिकांश जनजातियाँ या तो सोपान कृषि (टेरेस खेती) करती हैं, जिसे स्थानीय भाषा में झूम खेती भी कहते हैं। ये जनजातियाँ अधिकांशतया (Mostly) अत्यन्त निर्धन व आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं।

2. ***केन्द्रीय अथवा मध्य मण्डल-*** इस मण्डल में उत्तर भारत के गंगा मैदान तथा मोटे तौर पर दक्षिण में कृष्णा नदी के मध्य पठारों तथा पहाड़ी पट्टी सम्मिलित हैं तथा यह उत्तरी पूर्वी मण्डल से गारो पहाड़ियों तथा राजमहल पहाड़ियों के लुप्तांश द्वारा पृथक् हो जाती है। इस मण्डल में हम मध्य प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या का एक जबरदस्त जमाव पाते हैं, जिसका विस्तार उत्तर प्रदेश, मध्य भारत, दक्षिणी राजस्थान, उत्तरी महाराष्ट्र, बिहार तथा उड़ीसा तक है। उत्तरी राजस्थान, दक्षिणी महाराष्ट्र तथा बस्तर इस मण्डल की परिधि (Circumference) का निर्धारण करते हैं। इस मण्डल में बसने वाली महत्वपूर्ण जनजातियाँ सवारा, गदवा, गंजाम जनपद की वोरिडो, जवांग, खारिया, खोंड़, भूमिज तथा ओडिशा की पहाड़ियों की भुइयाँ हैं। छोटा नागपुर के पठार में मुण्डा, सन्थाल, ओराँव, हो व बिरहोर जनजातियाँ बसती हैं इसके और पश्चिम में विंध्य शृंखला के साथ कटकारी, कोल तथा भील जनजातियाँ रहती हैं। गोंड सबसे बड़े समूह की संरचना (Group Structure) करते हैं तथा 'गोंडवाना प्रदेश' के नाम से पुकारे जाने वाले क्षेत्र में रहते हैं। सतपुड़ा के दोनों ओर तथा मैकाल पहाड़ियों के चारों ओर भी जनजातियाँ पायी जाती हैं जैसे-कोराकू, अगारिया, परधान तथा वैगा, बस्तर की पहाड़ियों में कुछ सबसे रंगारंग (Colorful) जनजातियाँ रहती हैं जैसे मुरिया अबुझमार पहाड़ियों के पहाड़ी मुरिया तथा इन्द्रावती घाटी की गौर के सीमा वाली मारिया जनजातियाँ। इस मण्डल की अधिकांश जनजातियाँ अस्थायी कृषि (शिफ्टिंग खेती) के द्वारा अपना जीवनयापन करती हैं, किन्तु ओराँव, संथाल, मुण्डा तथा गोंड

जनजातियों ने पड़ोसी ग्रामीण लोगों से सांस्कृतिक सम्पर्क के फलस्वरूप हल से कृषि करना सीख लिया है।

3. ***दक्षिण मण्डल***– इस मण्डल में दक्षिणी भारत का वह भाग आता है जो कृष्णा नदी के दक्षिण में है तथा जो वायनाड से केप केमोरिन तक फैला हुआ है। आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, कुर्ग, ट्रावनकोर, कोचीन, तमिलनाडु आदि इस मण्डल में सम्मिलित हैं। इस मण्डल के उत्तर-पूर्व से प्रारम्भ करके चेंचू कृष्णा के उस पार नल्ली-मलाई पहाड़ियों के क्षेत्र तथा पूर्ववर्ती हैदराबाद राज्य में बसे हैं। दक्षिण किनारा के लोरागा से पश्चिमी घाटों के साथ-साथ यरुवा और टोडा कूर्म पहाड़ियों के निचले ढलान पर रहते हैं। जबकि इरुला, पलियन तथा कुरुम्बा वायनाड क्षेत्र में बसते हैं। भारतीय जनजातियों में सबसे आदिम जैसे-कडार, कानिक्कर, मालवादन, मलाकुखन आदि कोचीन तथा ट्रावनकोर के घने जंगलों में बसते हैं। वे विश्व के आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक पिछड़े लोगों में सम्मिलित हैं किन्तु उपरोक्त कथन के कुछ अपवाद (Exception) भी हैं जैसे टोडा, बदागा तथा कोटा जो नीलगिरि पहाड़ियों में रहते हैं। इस क्षेत्र के अधिकांश जनसमूह अपने भोजन संग्रह के लिए आखेट तथा मछली पकड़ने पर निर्भर रहते हैं।

- यद्यपि गुहा ने अण्डमान तथा निकोबार द्वीपों के निवासियों को इन मण्डलों में भी सम्मिलित नहीं किया है तथापि इन जनजातीय लोगों को, चतुर्थ मण्डल की संरचना करने वाला कहा जाता है। इस मण्डल में रहने वाली मुख्य जनजातियाँ-जारवा, ओंगे, उत्तरी सेंटिनलीज, अण्डमानी, शैम्पेन तथा निकोबारी हैं। यद्यपि ये भारतीय जनजातियों की मुख्य धारा से अलग हैं, फिर भी दक्षिण भारतीय जनजातियों से सजातीय दृष्टि से अधिक निकट हैं।

भारत की कुछ प्रमुख जनजातियाँ
(Same Major Tribes of India)

- भारत की कुछ प्रमुख जनजातियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:–

गोंड

- गोंडों की आबादी लगभग एक करोड़ बत्तीस लाख (2011) है तथा भारत का सबसे बड़ा जनजातीय समूह (Tribal Group) है। यह जनजाति छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में पायी जाती है। इस जनजाति का मुख्य संकेन्द्रण विंध्य तथा सतपुड़ा के बीच वन तथा पहाड़ी क्षेत्रों में है। इस जनजाति की विशेषता इनका गहरा रंग, चपटी नाक, मोटे होंठ, सीधे बाल तथा छोटा कद है। इनकी भाषा गोंडी है, जिसका संबंध ऑस्ट्रिक जाति से है।
- यह जनजाति 20-30 परिवारों के छोटे गांवों में रहती हैं तथा अपने घरों का निर्माण पूर्व-पश्चिम दिशा में सड़कों के दोनों ओर करते हैं। इनमें से ज्यादातर कृषि मजदूर अथवा छोटे स्थानाबद्ध (Localized) कृषक होते हैं। इनमें से कुछ, जैसे- ढीमर तथा केवट मत्स्यन पर निर्भर हैं, वही रावत मवेशी पालक हैं।
- गोंड घोटुल (युवा-आवास) का निर्माण करते हैं। यह एक क्लब की ही भांति हैं, जहाँ अविवाहित लड़के तथा लड़कियां अलग-अलग कोठरी में सोते हैं तथा एक दूसरे को पसंद कर वैवाहिक बंधन में बंध जाते हैं। वे संगीत तथा नृत्य में भाग लेते हैं। वे गांव को रात्रि में सुरक्षा भी प्रदान करते हैं।
- ऐसे प्रेम प्रसंगों को विवाह से पहले गुप्त रखा जाता है। लेकिन यह एक सामान्य सूझबूझ की बात है कि शायद ही कोई लड़की वैवाहिक संबंध से पहले कुंवारी रहती है। वास्तव में यह समुदाय शादी से पहले के यौन संबंधों की अनदेखी कर देता है, लेकिन शादी के बाद पति तथा पत्नी एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होते हैं। इस समुदाय में सजातीय (Endogamy) विवाह होता है। इस जनजाति में बहुविवाह (Polygamy) प्रथा प्रचलित है। इस जनजाति में तलाक भी आम बात है। यह जनजाति जड़त्ववादी (जीववादी) धर्म में विश्वास रखती है तथा अपने वंश देवता का पूजन करती है।
- गोंड परिश्रमी तथा ईमानदार होते हैं एवं चोरी को एक गंभीर अपराध मानते हैं। गोंड अंधविश्वासी (Superstitions) होते हैं तथा जादू-टोना व काला जादू में विश्वास करते हैं।

भील

- भील जनजाति की कुल आबादी 1.7 करोड़ (2011) से अधिक है। भीलों के वास स्थान की विशेषता यहाँ पाए जाने वाले मैदान, पहाड़ियाँ, पठार तथा वन क्षेत्र हैं। वे एकाकी तथा सापेक्षिक रूप से एकाकी स्थानों में रहते हैं।
- 'भील' शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ शब्द 'बिल्लू (अर्थ-धनुष)' से हुई है। दरअसल प्राचीन काल में भील अपनी धनुर्विद्या के लिये प्रसिद्ध थे, एकलव्य भी एक भील था।
- कुछ मानव विज्ञानी भील को द्रविड़ से पहले की एक जनजाति मानते हैं, जिसका शासन राजपूतों से पहले राजस्थान पर था। भील भाषा राजस्थानी भाषा की एक शाखा है।
- पहले भील जनजाति का मुख्य कार्य शिकार करना, खाद्य एकत्रण तथा चरागाही था। उनकी अर्थव्यवस्था स्थानीय संसाधनों पर आधारित थी। धीरे-धीरे यह जनजाति एक स्थान पर बसने लगी तथा इन्होंने स्थानाबद्ध कृषि (Local Agriculture) की शुरूआत की। उनके आर्थिक क्रियाकलाप में पशुपालन, मुर्गीपालन, चराई, वन उत्पादों का एकत्रण, लम्बरिंग, मत्स्यन तथा सेवा प्रदान करना शामिल हैं।

- भील आर्थिक रूप से पिछड़ी तथा अत्यधिक गरीब जनजाति है। मदिरा सेवन तथा जुआ खेलने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ गई है। प्राय: वे दूसरे समुदायों के साहूकारों से धोखा खाते हैं। कृषि क्रियाकलापों में पुरुष तथा महिला दोनों भाग लेते हैं।
- भील समाज विभिन्न राज्यों में 41 वंशों में विभाजित हैं। चूँकि भीलों का हिन्दुओं तथा मुसलमानों के साथ सांस्कृतिक सम्पर्क रहा है, इसलिये उनकी प्रथाएँ तथा रिवाज (Custom and Traditions) इस जनजाति में देखी जा सकती हैं। देश के कई भागों में वे लगभग हिन्दू जनजाति बनकर रह गए हैं क्योंकि वे जन्म, मुंडन, विवाह तथा मृत्यु पर हिन्दू संस्कारों का अनुसरण (Pursuance) करते हैं।
- भील जनजाति में विवाह न केवल सर्वव्यापक है, बल्कि अनिवार्य भी है क्योंकि अविवाहित पुरुष एवं महिला समाज द्वारा अच्छी नजर से नहीं देखे जाते हैं। लड़के लड़कियों को विवाह की पर्याप्त स्वतंत्रता है, वे अपने जीवन साथी का चयन करते हैं तथा इनका गांव के समुदाय द्वारा सामाजिक अनुमोदन (Approval) होता है। लेकिन निमर के ठाकुर भील इस स्वतंत्रता की इजाजत नहीं देते तथा वैवाहिक बंधन से पहले सगाई को प्रमुखता देते हैं।
- तलाक दोनों पक्षों में से किसी के द्वारा गांव पंचायत की सहमति से लिया जा सकता है। इस जनजाति में बाल विवाह प्रथा प्रचलित नहीं है।
- भील प्रकृति से जड़त्ववादी (जीववादी) होते हैं तथा यह उनके लोक संगीत एवं कला द्वारा प्रतिबिम्बित होता है। वे पुनर्जन्म में तथा आत्मा के स्थानांतरण में विश्वास रखते हैं। मोक्ष के लिये वे अच्छे आचरण पर बल देते है, वे अपदूतों, भूतों तथा काले जादू पर भी विश्वास रखते हैं। बीमारियों से बचने के लिये बड़वा (जादूगर) की सेवा ली जाती है। वे अंधविश्वासी भी होते हैं। इस जनजाति की महिलाओं में गोदना का प्रचलन है। वे अपने घरों के दीवार को लोक आकृतियों से सुसज्जित करते हैं। वे नृत्य तथा संगीत में भी रूचि रखते हैं तथा समुदाय के उत्सवों के लिये नौटंकी का भी आयोजन करते हैं।
- समाज मूल रूप से पितृ प्रधान होता है। इस जनजाति के परिवार देवी तथा देवताओं के लिये आदर की भावना रखते हैं। इसके अलावा वे 'बाबा देव' तथा 'घट देव' की भी अर्चना करते हैं।
- वे सामान्यत: छोटे-छोटे पुरवा बस्तियों में रहते हैं तथा अपने घरों का निर्माण करते हैं तथा अपने एकाकी परिवार का ध्यान रखते हैं।

संथाल

- यह जनजाति, एक बड़ा जनजातीय समूह है। मानव वैज्ञानिक साक्ष्यों के अनुसार इस जनजाति का उद्गम द्रविड़ों से हुआ है, जिसकी संपुष्टि उनकी ऑस्ट्रिक भाषा (संथाली भाषा तथा कोल चिका लिपि) करती हैं। संथाली विचारक यह मानते हैं कि संथालों ने ही सिन्धु घाटी सभ्यता को विकसित किया।
- संथाल मूल रूप से कृषक होते हैं (68%)। इस जनजाति की संपत्ति भूमि के रूप में होती है तथा शायद ही कोई संथाल भूमिहीन होता है। इसके अतिरिक्त यह जनजाति शिकार, मत्स्यन तथा वन उत्पादों के एकत्रण में भी जुटे रहते हैं। बढ़ती साक्षरता तथा सांस्कृतिक सम्पर्क (Cultural Contact) के कारण यह जनजाति सेवा, व्यापार तथा संविदा व्यापार के क्षेत्र में कार्य कर रही है। इस जनजाति की माँग वृहत झारखण्ड के लिये है, जिसका विस्तार पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा के संथाल क्षेत्रों में है।
- संथालों की एक संस्कृति तथा एक सुस्पष्ट सामाजिक व्यवस्था होती है। विधवा-विवाह की इजाजत इस जनजाति में दी गई है। संथालों का समाज पितृ-प्रधान (Patriachal) होता है। संथाली महिलाएँ भी परिवार के आय में योगदान करती हैं। ये महिलाएँ कृषि क्रियाकलापों में भाग लेती हैं तथा वंदना उत्सव से पहले अपने घरों को सुसज्जित करती हैं।
- कर्मा महिलाओं का एकमात्र त्योहार है, जो भादो के महीनों में मनाया जाता है। इस जनजाति के अन्य प्रमुख त्योहार रक्षाबंधन अथवा सोहराई (शीत ऋतु में फसल कटने के बाद) हैं।
- संथाल जीववादी होते हैं तथा कई देवी व देवताओं में आस्था रखते हैं। चांदो (चाँद) सबसे बड़ी शक्ति है। जाहिर-एरा इस जनजाति के ग्रामदेव हैं।

नागा

- नागा (जनसंख्या लगभग 2 मिलियन) उत्तर-पूर्वी भारत की एक बड़ी तथा राजनीतिक दृष्टि से जागरूक जनजाति है। इस जनजाति का सांस्कृतिक केन्द्र नागालैंड है, जहाँ वे कुल आबादी का लगभग 89 प्रतिशत हिस्सा हैं। वे मणिपुर, असम तथा मेघालय में अच्छी खासी संख्या में हैं। वे म्यांमार से सटे सीमावर्ती जिलों में भी देखे जा सकते हैं। जिस भू-भाग में नागा जनजाति रहती है, उसकी विशेषता ब्रेल श्रेणी तथा अराकान योमा का दंतुरित कटक है। नागालैंड में शीत ऋतु ठंडी होती है तथा ग्रीष्म ऋतु साधारण रूप से गर्म व आर्द्र होती है। अंग्रेजी नागालैंड की आधिकारिक भाषा है। यह भाषा नागालैंड के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक एकीकरण में सहायक हुई है। नागाओं का गाँव सुरक्षा के कारण कटकों

के ऊपर स्थित होता है। वे पहाड़ के ढालों का उपयोग वेदिका कृषि के लिये करते हैं।

- जहाँ वेदिकाओं का विकास मुश्किल होता है, वे वहां स्थानांतरित कृषि (Shifting Agriculture) के अभ्यस्त हैं।
- प्रत्येक गाँव में अविवाहितों के लिये एक मोरंग (समुदायिक शयनशाला) होता है जहाँ लड़के व लड़कियां दोनों रात में रहते हैं। यह एक युवा क्लब की तरह कार्य करता है, जहाँ युवाओं को जनजातीय प्रथाओं से अवगत कराया जाता है। उन्हें यौन शिक्षा भी दी जाती है तथा अक्सर विवाह के पूर्व के उनके संबंध ग्रामीण समुदाय की सहमति से स्थायी संबंधों (विवाह) में परिवर्तित हो जाते हैं।
- नागा मुख्यतः कृषक समुदाय के होते हैं (87%)। वे स्थानांतरित कृषि (झूम कृषि) के अभ्यस्त हैं। कोहिमा के नजदीक अंगामी जनजाति ने धान की खेती के लिये वेदिकाओं का निर्माण किया है। वे धान, दलहन, सब्जी तथा कपास की खेती करते हैं। नागा अपने कलात्मक हस्तशिल्प के लिये मशहूर हैं खासकर बुनाई तथा लकड़ी पर नक्काशी के लिए।
- नागाओं का एक सुव्यवस्थित सामाजिक संगठन है, जो अनेकता में एकता का उदाहरण है। संयुक्त परिवार व्यवस्था भी इस जनजाति में प्रचलन में है। परिवारिक तथा सामुदायिक मामलों में गाँव का मुखिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- नागाओं में बाल विवाह का चलन नहीं है। यह जनजाति विवाह से पहले लड़कियों को अधिक आजादी देती है। वे एक सुखद जीवन जीते हैं। महिलाओं तथा पुरुषों दोनों के पहनावे अच्छे होते हैं। सामुदायिक अवसरों पर इस जनजाति के सदस्य नृत्य भी करते हैं। परम्परागत रूप से वे जीववादी हैं, लेकिन अब अधिकांश नागा ईसाई बन गए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह जनजाति आगे हैं।

थारू

- थारू (जनसंख्या लगभग 1.25 लाख) उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड की सबसे प्रमुख जनजाति है। थारू का सबसे अधिक संकेन्द्रण ऊधमसिंह नगर के खटीमा तथा सितारगंज तहसील में है, जहाँ इनकी आबादी कुल जनसंख्या का लगभग 55% है। वे पीलीभीत, खीरी, गोरखपुर तथा बहराइच में भी पाए जाते हैं।
- थारू मुख्य रूप से कृषक हैं। कृषि के मन्द महीनों में मत्स्यन इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय हो जाता है।
- इस जनजाति के कुछ लोगों के लिये शिकार करना तथा खाद्य एकत्रण मुख्य व्यवसाय है। थारू मुख्य रूप से मंगोलाइड प्रजाति के हैं, जिनमें कुछ गैर-मंगोलाई विशेषताएँ भी देखी जा सकती है।
- थारू एक सुव्यवस्थित समुदाय है तथा इनके प्रत्येक गांव में एक ग्राम पंचायत होती है, जिसका प्रमुख प्रधान होता है, जो समुदाय के सब मामलों में एक अहम भूमिका निभाता है।
- यद्यपि इस जनजाति का समाज पितृ प्रधान होता है लेकिन महिलाओं को ऊंचा दर्जा दिया गया है। थारू अपने आप को राजपूत मानते हैं। इस जनजाति में ज्यादातर हिन्दू धार्मिक रिवाज प्रचलन में हैं। वे होली, दीवाली तथा दशहरा भी मनाते हैं। वे जादू-टोना में भी विश्वास करते हैं। मूलतः इस जनजाति के लोग ईमानदार, शान्तिप्रिय तथा सीधे-साधे होते हैं, लेकिन बाहरी सम्पर्क के कारण इनके आचरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। थारू अत्यधिक अंधविश्वासी होते हैं तथा अपने पुरोहित में पूर्ण रूप से आस्था रखते हैं।

टोडा

- तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में तथा निकटवर्ती कर्नाटक के कुरनूल जिले में पायी जाने वाली टोडा एक लघुसंख्यक जनजाति है। यह जनजाति पशुचारणिक चलवासिता (Pastoral nomadism) का एक उदाहरण है। 'टोडा' शब्द की उत्पत्ति 'टांड्रा' से हुई है, जो इस जनजाति के लिये एक पवित्र वृक्ष है।
- टोडा एक पशुचारी जनजाति (Pastoral Tribe) है। इस जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से भैंसों के प्रजनन तथा डेरी उत्पादों पर आधारित है। इस जनजाति में भ्रातृ बहुपति-प्रथा (Fratenral Polyandry) देखा जाता है। सबसे बड़े भाई का विवाह जिस लड़की के साथ होता है, उस पर सभी छोटे भाइयों का समान अधिकार होता है। इस जनजाति का समाज पितृ-प्रधान है। विवाह एक साधारण समारोह होता है तथा तलाक यदा-कदा ही देखने को मिलता है। महिलाओं को आदर भाव के साथ देखा जाता है। यह जनजाति जीववादी है। वे टिकिरजी की पूजा करते हैं। अब ईसाई धर्म भी टोडा तक पहुंच रहा है।
- इस देश में जनसंख्या की दृष्टि से अनेक भिन्नताएं पायी जाती हैं। यहाँ विभिन्न जनजातीय लोगों की कुल जनसंख्या वर्तमान में 10.43 करोड़ (2011) से कुछ अधिक ही है। प्रत्येक जनजातीय समूह के जीवन की एक विशिष्ट पद्धति है, जो अन्य जनजातियों की जीवन पद्धति से भिन्न है।

शीर्ष पाँच अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले राज्य / के.शा.प्र.	
• मध्य प्रदेश (14.7%)	1,53,16,784
• महाराष्ट्र (10.1%)	1,05,10,213
• ओडिशा (9.2%)	95,90,756
• राजस्थान (8.9%)	92,38,534
• गुजरात (8.6%)	89,17,174

जनजातियों का भाषायी वर्गीकरण

भारत के जनजातीय लोग मुख्यत: तीन भाषा परिवारों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं:- 1. द्रविड़, 2. ऑस्ट्रिक, 3. तिब्बती-चीनी।

द्रविड़ भाषागत परिवार के अन्तर्गत आने वाली भाषाओं को बोलने वाले जनजातीय लोग मध्य तथा दक्षिणी भारत में बसते हैं।

गोंड द्रविड़ परिवार में बोली जाने वाली जनजातीय बोलियों में प्रमुख स्थान रखती है तथा यह गोंड जनजाति द्वारा, जो मध्य प्रदेश से आन्ध्र प्रदेश तक फैली है, विस्तार के साथ बोली जाती है। इसका कोई साहित्य नहीं है, किन्तु इसके बोलने वालों की संख्या बल को ध्यान में रखते हुए इसे जनजातीय भाषाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। इस समूह की एक अन्य महत्वपूर्ण भाषा 'कोई' है जो उड़ीसा के कांध, छोटा नागपुर की ओरॉंव तथा राजमहल पहाड़ियों के माल्टो द्वारा बोली जाती है। टोडा, पलियन, चेन्चू, इरुला तथा कादार भी द्रविड़ परिवार में सम्मिलित किए जाते हैं।

ऑस्ट्रिक परिवार की बोलियाँ मुण्डा भाषा परिवार के रूप में भी जानी जाती हैं। मैक्समूलर प्रथम विद्वान् थे जिन्होंने उसे द्रविड़ भाषा परिवार से अलग किया तथा उन्होंने ही इस समूह को मुण्डा बोली परिवार का नाम प्रदान किया। इस परिवार की बोलियाँ मुख्यत: छोटानागपुर क्षेत्र की जनजातियों द्वारा बोली जाती हैं किन्तु उनका प्रचलन, कुछ कम सीमा तक मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, मद्रास तथा बिहार से शिमला की पहाड़ियों तक हिमालय के तराई क्षेत्रों में फैला है। बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की संथाली बोली तथा बिहारी क्षेत्र की मुण्डारी, हो, खरिया, भूमिज व कुछ अन्य बोलियाँ भी इस परिवार में सम्मिलित हैं।

तिब्बती-चीनी बोलियाँ मंगोल प्रजाति समूह की अधिकांश जनजातियों द्वारा बोली जाती हैं। यह परिवार दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है- 1. तिब्बत-बर्मी, 2. सियामी- चीनी। असम, मेघालय तथा उत्तर-पूर्वी भारत के अन्य भागों की जनजातियाँ इस परिवार की एक न एक बोली बोलते हैं।

जातीय विविधता (Caste Diversity)

- जाति व्यवस्था भारतीय समाज की मौलिक विशेषता है, जो प्राय: भारत के प्रत्येक धर्म में किसी न किसी रूप में पायी जाती है। यह भारतीय समाज में सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification) के एक प्रमुख स्वरूप को परिलक्षित करती है।
- जाति व्यवस्था के अंतर्गत भारतीय समाज कुछ जातीय समूहों में वर्गीकृत है और ये समूह सोपानिक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसके अंतर्गत एक जाति समूह एक अंतर्विवाही समूह होता है जिसकी सदस्यता जन्मजात होती है, उसका एक निश्चित व्यवसाय होता है और जो कुछ विशेषाधिकारों और निर्योग्यताओं (Privileges and Disabilities) के साथ खान-पान और सामाजिक सहवास संबंधी निषेधों का पालन करता है।
- हिन्दू समाज अनेक जातियों एवं उपजातियों में विभक्त है। इसे हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं:-

हिन्दू समाज की जातियों एवं उपजातियों का वर्गीकरण

ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | सेवक जातिया | शूद्र

1. **ब्राह्मण–** नम्बूदरी, चितपावन, सारस्वत, कान्यकुब्ज, सरयूपारणी, बंगाली, तमिल एवं कश्मीरी।
2. **क्षत्रिय–** सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, राजपूत: परिहार, चौहान, राठौर, कुशवाह आदि।
3. **वैश्य–** अग्रवाल, गुप्ता, चेट्टियार, मारवाड़ी, गहोई, साहू, महाजन, सेठ आदि।
4. **सेवक जातिया–** अहीर, कुर्मी, सोनार, नोनिया, काछी, कहार, कोटार, नाई, लोहार, बढ़ई, माली, बारी आदि।
5. **शूद्र–** चमार, महार, मांग, धोबी, हेला, भंगी, दुसाध, धरकार।

भारतीय समाज में विविधताओं में मौलिक एकता
Fundamental Unity in Diversity in Indian Society

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत एक बहुलवादी समाज है जिसमें विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। यहाँ जलवायुवीय एवं भाषायी विविधता के साथ अनेक संस्कृतियाँ हैं। कला एवं साहित्य, परंपरा एवं विश्वासों में विभिन्नता है। लेकिन इस विभिन्नताओं के बावजूद भारतीय समाज में एकता की विभिन्न कड़ियां मौजूद है। ये कड़ियां यद्यपि कभी-कभी सांस्कृतिक संघर्षो एवं नृजातीय संघर्षों के कारण कमजोर होती दिखती है, किंतु वे स्वत: मजबूत भी हो जाती है। वर्तमान वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के युग में यह विभिन्नता कम हुई है, जिससे भारतीय समाज के विविध समुदायों में पहचान की समस्या उत्पन्न होती दिखाई दे रही है। इसके बावजूद वर्तमान परिवर्तनशील विश्व में जहाँ भारत के पड़ोसी देश अपने एकरंगी समाज को भी एक सूत्र में नहीं बांध पाए एवं असफल राष्ट्र बन गए है, वहीं भारतीय समाज ने अपनी ग्रहणशीलता एवं लचीलेपन के कारण अपनी बहुरंगी छवि को कायम ही नहीं रखा बल्कि उसे और मजबूत बनाया है। भारत की यह बहुरंगी संस्कृति एवं अनेकता भारत की कमजोरी नहीं बल्कि उसकी मजबूती को बयां करती है तथा उसे विश्व में एक विशिष्ट प्रस्थिति (Status) प्रदान करती है।

- भारतीय समाज में एकता के लक्षणों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है:–

भौगोलिक विविधता में एकता (Unity in Geographical Diversity)

- भारत एक बड़ा भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ की प्रकृति एवं पर्यावरण में भिन्नता दिखाई पड़ती है, किंतु ये विभिन्न

भौगोलिक क्षेत्र मिलकर भारत को एक उपमहाद्वीप के रूप में निर्मित करते हैं। यहाँ विभिन्न क्षेत्र इतने अलग नहीं है कि इनको पार करते हुए वहां तक पहुंच नहीं बनायी जा सकती दक्षिण भारत का व्यक्ति आराम से हिमालयी राज्यों एवं पूर्वोतर क्षेत्र में आ जा सकता है। भारत के अधिकांश क्षेत्र एक ही ऋतु चक्र से प्रभावित है। मानसूनी वर्षा भारत के अधिकांश क्षेत्रें को प्रभावित करती है हिमालय की नदियों का पानी विभिन्न राज्यों से बहता हुआ दक्षिण पूर्वी तट पर समुद्र में गिरता है तथा समुद्र का जल वाष्पित होकर हिमालय को पुनः हिमाच्छादित करता है।

- यद्यपि भारतवर्ष को भौगोलिक दृष्टिकोण से कई क्षेत्रों में विभक्त किया गया है फिर भी भारत एक सम्पूर्ण भौगोलिक इकाई है। प्रायद्वीप का सीमा क्षेत्र दुर्गम हिमाच्छादित पर्वतों, सागरों का बना है जो इस देश के लोगों को अन्य देशों व वहां की संस्कृतियों से पृथक तो करता ही है, साथ ही इस भू-भाग में बसने वालों को राष्ट्रीय स्वरूप भी प्रदान करता है। यहाँ की पर्वतमालाएँ, नदियां, कछार, पठार, मैदान तथा सागर तट एक दूसरे के पूरक होकर जनजीवन को प्रभावित करते हैं तथा किसी एक भू-भाग पर आक्रमण अथवा अतिक्रमण होने पर समूचा देश उद्वेलित हो उठता है।

धार्मिक विविधता में एकता (Unity in Religious Diversity)

- भारत में विभिन्न धर्मावलम्बी (Religious) रहते हैं उनके देवता या आदर्श भिन्न दिखाई पड़ते हैं किंतु उन सभी धर्मावलम्बियों में एकता के तत्व विराजमान हैं। सभी धर्मावलम्बियों में एकेश्वरवाद, आध्यात्मवाद, मुक्ति की अवधारणा, उपासना की एक निश्चित पद्धति, कर्म की अवधारणा, माया विचार, जगत की शाश्वतता (Eternity) का मूल्य, आध्यात्मिक सत्ता से संबंध जोड़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है। विभिन्न धर्मावलम्बियों के त्यौहारों में अन्य धर्म के लोग भाग लेते हैं जो कि भारत की सांस्कृतिक एकता (Culture Unity) का प्रतीक है। भारत की धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक व्यवस्था ने भी विभिन्न धर्मों के बीच भिन्नता के होते हुए भी उनको एकता के सूत्र में बांध दिया है क्योंकि भारत का कोई राजधर्म नहीं है और राज्य की नजर में सभी धर्मों का समान महत्व है।
- देश में विभिन्न धर्मावलम्बी हैं जो अपनी पद्धति के अनुसार उपासना करते हैं। ये धर्म व्यक्ति के जन्म व जाति से जुड़े रहते हैं। देश के सभी क्षेत्रों में धर्मावलंबियों के तीर्थस्थल हैं। आध्यात्म, मत-मतान्तर एंव साहित्य ने एक दूसरे धर्म से बहुत कुछ अंगीकार किया है और जनजीवन पर गंगा-जमुना ने बहुरंगी छवि छोड़ी है। धार्मिक सहिष्णुता का पराक्रम ऐसा रहा है कि सभी धर्म एक ही रंग में रंग से गये हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता में एकता (Unity in Socio-Cultural Diversity)

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बसे लोगों के परिवार, विवाह, रीति-रिवाज, वस्त्र शैली, आदि में भी पर्याप्त भिन्नता के बावजूद समाज व्यवस्था में सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं। संयुक्त परिवार-प्रणाली, जाति प्रथा, ग्राम पंचायत, गोत्र व वंश-व्यवस्था भारतीय समाज के आधार रहे हैं। रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली, होली, ईद, मोहर्रम आदि त्यौहारों का फैलाव समूचे भारत में है। इसी प्रकार सारे देश में जन्म-मरण के संस्कार व विधियां, विवाह-प्रणालियां, शिष्टाचार, आमोद-प्रमोद, उत्सव, मेलों, सामाजिक रूढ़ियों और परंपराओं में पर्याप्त समानता देखने को मिलती है। भारतीय जीवन में कला की एकता भी कम उल्लेखनीय नहीं है। स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि के क्षेत्र में हमें अखिल भारतीय समानता देखने को मिलती है।
- देश के विभिन्न भागों में बने मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, आवास भवनों तथा इमारतों में भी कला के अपूर्व संयोजन का आभास होता है। दरबारी, ध्रुपद, भजन, टप्पा, गजल, यहाँ तक कि पाश्चात्य धुनों का भी विस्तार सारे भारतवर्ष में है। इसी प्रकार भरतनाट्यम, कथककली, कत्थक आदि नृत्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं। अतः कला के क्षेत्र में भारत में अखण्ड एकता है।
- भारतीय समाज में यद्यपि संगीत एवं कलाएं विविध रूपों में विराजमान रही है, किंतु अखिल भारतीय स्तर पर इन कलाओं का प्रचलन हर क्षेत्र में दिखाई देता है। उदाहरण के लिए यद्यपि द्रविड़ शैली दक्षिण भारत एवं नागरशैली उत्तर भारत की मंदिर निर्माण कला शैली है किंतु इनका फैलाव सम्पूर्ण भारत में दिखाई पड़ रहा है। इसी प्रकार संगीत के विभिन्न घरानों का संगीत अखिल भारतीय स्तर पर विराजमान है।

भाषाई विविधता में एकता (Unity in Linguistic Diversity)

- भारत वर्ष में भाषाओं की बहुलता (Multiplicity of Languages) है परन्तु रोचक तथ्य तो यह है कि वे सभी एक ही सांचे में ढली हुई हैं। अधिकांश भाषाओं की वर्णमाला एक ही है व उन सभी पर संस्कृत भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है। डॉ॰ लूनिया ने लिखा है कि ईसा से पूर्व तृतीय शताब्दी में इस विशाल देश की एक ही राष्ट्रभाषा प्राकृत भाषा थी। कतिपय शताब्दी पश्चात संस्कृत जैसी एक अन्य भाषा ने इस उप-महाद्वीप के दूरस्थ भागों में भी अपना प्रभाव जमा लिया। त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को हिन्दी, अंग्रेजी व एक अन्य प्रान्त की भाषा सिखायी जाती है। इससे विभिन्न भाषा-भाषियों

के बीच एकता के भाव पैदा हुए हैं। समस्त देश को एक सूत्र में पिरोने का काम पहले प्राकृत व संस्कृत भाषा ने किया, वर्तमान में यह अंग्रेजी एंव हिन्दी भाषा द्वारा किया जा रहा है।

प्रजातीय विविधता में एकता (Unity in Racial Diversity)

- यह सच है कि भारत वर्ष प्रजातियों का एक अजायबघर है। यहाँ विश्व की तीन प्रजातियां श्वेत, पीत, और श्याम वर्ण तथा इनकी उप शाखाओं के लोग निवास करते हैं। प्रजातीय भिन्नता (Racial Difference) होने पर भी अमेरिका एंव अफ्रीका की भांति यहाँ प्रजातीय संघर्ष (Racial Conflict) एंव टकराव रंगभेद के आधार पर नहीं हुए वरन पारस्परिक सद्भाव और सहयोग ही पनपा है। बाहर से आयी आर्य, द्रविड़, शक, हूण, तुर्क, पठान, मंगोल आदि प्रजातियाँ हिन्दू समाज में इतनी घुल मिल गई है कि इनके पृथक अस्तित्व को आज पहचानना कठिन है। उपर्युक्त विवरण से स्प्ष्ट है कि बाहरी तौर पर भारतीय समाज, संस्कृति व जनजीवन में विभिन्नताएं दिखलाई देने पर भी भारत एक है, मौलिक व अखण्ड रूप से एक है। एक ही है इसकी संस्कृति, धर्म, भाषा और राष्ट्रीयता। इस एकता को नष्ट नहीं किया जा सकता।

भारतीय समाज में विविधताजनित चुनौतियाँ
Challenges Arising from Diversity in Indian Society

- भारतीय समाज विविधताओं से युक्त है। भारतीय समाज की विविधता जहाँ इसे कई रूपों में मजबूती प्रदान करती है तो वहीं इसके समक्ष कई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है।
- भारत एक बहुधार्मिक समाज (Multi-religious Society) है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, पारसी आदि धार्मिक समुदाय के लोग निवास करते हैं। भारतीय समाज की यह धार्मिक विविधता सम्प्रदायवाद के रूप में भारतीय समाज के समक्ष एक महत चुनौती प्रस्तुत कर रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् से हमें लगातार सम्प्रदायिक दंगों का सामना करना पड़ रहा है। सम्प्रदायवाद का विस्तार कश्मीर से तमिलनाडु एवं गुजरात से असम तक देखा जा सकता है। 1984 के सिख दंगे, 2002 के गुजरात दंगे तथा अभी हाल ही में हुए असम दंगे एवं मुजफ्फरनगर दंगे भारतीय विविधता के समक्ष गंभीर चुनौती पेश कर रहे हैं। आज धर्म आधारित आतंकवाद भी भारतीय समाज की एकता व अखंडता के समक्ष एक वृहद चुनौती प्रस्तुत कर रहा है।
- भारतीय समाज की नृजातीय विविधता (Ethnic Diversity) क्षेत्रवाद व अलगाववाद के रूप में चुनौती पेश कर रही है। क्षेत्रवाद व अलगाववाद भारतीय समाज की एकता व अखंडता के समक्ष लगातार खतरा प्रस्तुत कर रहा है। क्षेत्रीयता की वैचारिकी ने भूमि पुत्र (Sun of the soil) के नारे के आधार पर क्षेत्रीय पृथकतावादी आन्दोलन उभारा है। गोरखालैंड, बोडोलैंड तथा खालिस्तान के निर्माण से सम्बन्धित आन्दोलनों ने भारतीय एकता, अखंडता व स्थायित्व के समक्ष गंभीर चुनौती पेश की है। क्षेत्रवाद से सम्बन्धित एक प्रमुख समस्या स्थानीय बनाम बाहरी का भी रहा है। असम में बिहारी मजदूरों की हत्या एवं भगाया जाना, महाराष्ट्र के क्षेत्रीय दलों द्वारा बाहरी लोगों का विरोध आदि घटनाएँ भी भारतीय समाज की विविधता में एकता के समक्ष गंभीर चुनौती पेश कर रही हैं।
- भारत में जाति व्यवस्था एक संस्था के रूप में अत्यंत प्राचीन है। भारतीय जाति व्यवस्था के अन्तर्गत सैकड़ों जातियों की उपस्थिति जातीय विविधता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती है। किन्तु जातिवाद भारतीय समाज के जातीय विविधता के समक्ष कई रूपों में गंभीर चुनौती पेश कर रहा है। जातिवाद का आधुनिक स्वरूप भारत में औपनिवेशिक काल में उभरा है। आधुनिक काल में जातिवाद ने अगड़ी एवं पिछड़ी जातियों को सामाजिक दृष्टि से एक दूसरे के विरूद्ध लामबंद किया है। जातीय ध्रुवीकरण ने जातीय संघर्ष को बढ़ाया है। इसका विकराल रूप जातीय नरसंहारों के रूप में दृष्टिगत होता है। आज हमारा समाज जातीय हिंसा एवं जातीय संघर्ष आदि का सामना कर रहा है। इसके कारण विभिन्न जाति समूहों के मध्य कटुता का फैलाव हुआ है।
- भारतीय समाज में भाषा के आधार पर भी विविधता दृष्टिगत होती है। भाषायी विविधता (Linguistic Diversity) भाषावाद के रूप में चुनौती प्रस्तुत कर रही है। दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आन्दोलनों को इसके उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। भाषायी आधार पर अक्टूबर, 1953 में तेलगु भाषी राज्य आन्ध्र प्रदेश के निर्माण के पश्चात् भारत के विविध क्षेत्रों-गुजरात, पंजाब, हरियाणा, नागालैंड आदि में भी पृथकतावादी आन्दोलन का दौर शुरू हुआ तथा कालांतर में भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया। भाषायी आधार पर राज्य पुनर्गठन की प्रक्रिया ने कई क्षेत्रीय आन्दोलनों को जन्म दिया जैसे-तेलंगाना का पृथकतावादी आन्दोलन, विदर्भ आन्दोलन, द्रविड़स्तान आन्दोलन इत्यादि। इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि विभिन्न राज्यों में गैर भाषायी अल्पसंख्य समूहों के प्रति बैर की भावना विकसित हुई। उपरोक्त घटनाएँ भारतीय समाज की विविधता में एकता के समझ एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश कर रहे हैं।
- उपरोक्त विवेचन भारतीय समाज की विविधता जनित चुनौतियों को स्पष्ट करते हैं। परन्तु उपरोक्त चुनौतियों का

एक मात्र कारण विविधता को ठहराना तार्किक नहीं होगा क्योंकि विविधता तो भारतीय समाज की प्राचीन काल से ही प्रमुख विशेषता रही है, परन्तु अधिकतर विविधता जनित चुनौतियाँ नवीन परिघटना है। अत: यह कहना अधिक तार्किक होगा कि कई कारकों ने भारतीय समाज के विविधता युक्त वातावरण ने कई कारकों के साथ संयुक्त होकर उपरोक्त चुनौतियों को उत्पन्न किया है।

भारतीय समाज-विविधता में एकता : संभावित प्रश्न

1. भारतीय समाज की विविधता के विभिन्न पहलुओं की चर्चा कीजिए। भारतीय समाज एकता में अनेकता एवं अनेकता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। स्पष्ट कीजिए।
2. भारतीय समाज की विविधता ने भारत का एक राष्ट्र के रूप में समेकन में किस प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न की है। चर्चा करें।
3. वर्तमान वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज की विविधता को किस प्रकार प्रभावित किया है? उत्तर दीजिए।
4. "वर्तमान सम्प्रदायिक हिंसा व क्षेत्रवाद की बढ़ती घटनाएँ भारतीय समाज की अनेकता में एकता पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं।" स्पष्ट कीजिए।
5. भारतीय समाज की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने वाले कारकों को स्पष्ट कीजिए।
6. लुप्त होती जनजातियाँ जनजातीय विविधता के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती हैं। इस चुनौती से निपटने के उपाए सुझाएँ।
7. भारत में भाषाई विविधताजनित चुनौतियों से निपटने हेतु भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की नीति कहाँ तक सफल रही, अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

✪✪✪✪✪